वर्ष -14 मार्च, 2018 अंक-143

Regd. Postal No. Dehradun-328/2016-18

Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

इस अंक में

घमण्ड काहे का?	02
देववाणी	03
मनुष्यात्मा अमर है क्या?	04
एक सेवक का पत्र	06
कृतज्ञता सुमन	08
सद् कार्य	11
मेथी	12
CLUES TO HAPPINESS	14
आपने कहा था	16
देव जीवन की झलक	18
आत्मा क्या है?	20
भाव प्रकाश	22
शुभ संग्राम	27
प्रेरणास्पद उद्बोधन सेवा	28
न्यूजर्सी केन्द्र समाचार	29
रजिस्ट्रेशन एक्ट	32

जीवन व्रत

'सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।'

- देवात्मा

सम्पादक

नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल

अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : प्रमोद कुमार कुलश्रेष्ठ

**For Motivational Talks/Lectures/Sabhas :
Visit our channel SHUBHHO ROORKEE on
www.youTube.com**

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

वार्षिक सदस्यता ` 100, सात वर्षीय ` 500, पन्द्रह वर्षीय ` 1000

मूल्य (प्रति अंक): ` 9

सम्पर्क सूत्र : पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु

दूरभाष संख्या: 01332-272000, 94672-47438, 99271-46962 (संजय धीमान)

समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)

e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

घमण्ड काहे का?

जन्म दूसरे ने दिया, नाम दूसरे ने दिया, शिक्षा दूसरे ने दी, रिश्ता भी दूसरे से जुड़ा, काम करना भी दूसरे ने सिखाया, अन्त में शमशान भी दूसरे ले जायेंगे। तुम्हारा इस संसार में क्या है, जो तुम घमण्ड करते हो?

ADVICE

Advice is seldom welcome and those who need it the most, always like it the least.

बदला लेने से मनुष्य अपने शत्रु के समान हो जाता है,
न लेने से उससे श्रेष्ठ हो जाता है।

Stop treating differences as conflicts. View them as point of views. Appreciate differences rather than receiving them as pain. The moment you relate to differences as pain, you will expenience them as pain.

नकारात्मकता से निकलो

नकारात्मकता व अपने दायरे तक सीमित व्यक्ति कुढ़ते, खीजते एवं त्रास भुगतते रहते हैं।

एक कुएँ ने समुद्र तक शिकायत पहुँचाई –

''जब सभी नदी–नालों को आप बुलाते हैं और आश्रय देते हैं, तो मेरी ही उपेक्षा क्यों?''

समुद्र ने उत्तर भिजवाया, ''जिस नकारात्मकता के दायरे में घिर गए हो, उससे तो निकलो। फिर मंज़िल सरल है और लक्ष्य निकट।''

साहस के आगे धन, पदवी और प्रभाव कभी नहीं टिक पाते हैं।

देववाणी

मैं नेचर में हूँ, मगर सब कुछ नहीं हूँ। नेचर के बिना मैं कुछ भी नहीं। मेरी यह हस्ती कुछ भी नहीं। इन्सानी हस्ती समुद्र में बुलबुले की मानिन्द है। इन्सान का अगर इस प्रकार का साधन हो, तो उसका सब घमण्ड चूर हो जाता है।

- देवात्मा

अहंकार हमारे उत्थान में बहुत बड़ी दीवार खड़ी कर देता है।
सेवा भाव का अभ्यास करते रहने से इसका अन्तर
में जन्म ही नहीं हो पाता।

Not to have control over the senses is like sailing in a rudderless ship bound to break to pieces on coming in contact with the very first rock.

चाँद अपनी रोशनी पूरे आसमान पर फैला देता है,
मगर दाग अपने सीने तक ही महफ़ूज़ रखता है।

☺☺☺☺☺☺ **xqnxqnh**

रमेश – हमारी शादी को सवा साल हो गया और सवा साल में एक शब्द भी अपनी पत्नी से नहीं बोला।

मदन– अच्छा, पर ऐसा क्यों?

रमेश– दरअसल, उसे पसन्द नहीं कि जब वह बात कर रही हो, तो कोई उसकी बात बीच में काटे।

प्रयत्नशीलता के बल पर ही पराजय को भगाया जा सकता है।

मनुष्यात्मा अमर है क्या?

क्या मनुष्यात्मा अमर है?

विख्यात धर्मों का यह मत है कि अपने प्रकृतिगत स्वभाव के कारण 'मनुष्यात्मा' अमर है। उनका मानना है कि प्रत्येक जीवित अस्तित्व चाहे वन वनस्पति जगत् का हो, चाहे पशु जगत् का, सब जीवित रहना तथा मृत्यु से रक्षा पाना चाहते हैं। अतः जीवित रहने तथा मृत्यु से रक्षा पाने के लिए वह प्रत्येक सम्भव व असम्भव प्रयत्न तथा कठोर संग्राम करते हैं। मनुष्य जगत् का प्रत्येक प्राणी भी जीवित रहने तथा मृत्यु से रक्षा पाने की प्रबल आकांक्षा रखता है तथा कठोर संग्राम करता है। अतः मनुष्य की यह भ्रम पूर्ण धारणा बन गई है कि जीवित रहने की प्रबल आकांक्षा तथा जीवित रहने के लिए कठोर संग्राम उसके जीवित अर्थात् अमर होने का ही रूप है। अधिकतर मनुष्यों ने इस प्रकार की विचार जनित प्रबल आकांक्षा की यह धारणा बना ली है कि 'मनुष्यात्मा' अमर है।

इस विषय में प्रकृतिमूलक (**Nature Based**) तथ्य क्या हैं? क्या हम इस बात को सरलता से नहीं समझ सकते कि जीवित रहने की आकांक्षा तथा जीवित रहने की क्षमता, दोनों अलग-अलग बातें हैं। विश्व में करोड़ों मनुष्य हैं, जो जीवित रहना चाहते हैं तथा लम्बी आयु तक जीवित रहना चाहते हैं। परन्तु जीवित रहने की आकांक्षा उनको इस योग्य भी नहीं बना सकी कि वह सामान्य जीवन अवधि को भी सुखपूर्वक तथा शान्ति से जी सकें। अमर होने की बात तो बहुत दूर की कौड़ी है।

जीवन के अन्य पक्षों का अवलोकन करें, तो भी हम ऐसा ही कुछ पायेंगे। हम सब जानते हैं कि संसार में करोड़ों मनुष्य ख़ूब धन-दौलत लाभ करना चाहते हैं तथा बहुत धनवान होना चाहते हैं। परन्तु सारी आयु कठोर परिश्रम करके भी अधिकतर प्रायः निर्धन ही रहते हैं। इसी तरह जीवित रहने की मात्र आकांक्षा होने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि किसी मनुष्य में जीवित रहने की योग्यता व क्षमता भी आ गई है, यह दोनों बातें जुदा-जुदा हैं तथा इनका अर्थ भी अलग-अलग है।

वनस्पति, पशु तथा मनुष्य जगत् के प्रत्येक अस्तित्व का जीवित रहना इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी जीवनी शक्ति (अर्थात् आत्मा) में शरीर निर्माण तथा जीवित रहने की क्षमता कितनी है। यदि किसी अस्तित्व की किसी भी अवस्था में रोग-प्रतिरोधक तथा निर्माणकारी शक्ति नष्ट हो जाए व दुर्बल हो जाए कि उसकी उपर्युक्त निर्माण तथा रख-रखाव (**Maintenance**) की क्षमता न रहे, तो ऐसा

जो किसी को दुःख नहीं देता और सबका भला चाहता है,
वह अत्यन्त सुखी रहता है।

अस्तित्व जीवित नहीं रह सकता, नष्ट हो जाता है तथा व्यक्तिगत अस्तित्व के विचार से वह विश्व पटल से आलोप हो जाता है। साधारण शब्दों में जीवनी शक्ति का दुर्बल व विनष्ट होना, अर्थात् सम्पूर्ण अस्तित्व का विनष्ट होना है। अत: किसी व्यक्ति को इस भ्रमपूर्ण अवस्था में नहीं रहना चाहिए कि मेरी आत्मा अमर है।

अत: हम सबके लिए यह परमावश्यक है कि हम प्रकृति (Nature) के उन विश्व व्यापी तथा अटल नियमों का ज्ञान लाभ करें, जिनके पूर्ण होने से जीवनी शक्ति एक गठन प्राप्त रूप में उत्पन्न तथा विकसित होती है, सुरक्षित रहती है, लम्बे काल तक जीवित रहती है। उन नियमों का ज्ञान लाभ करना भी अति आवश्यक है, जिनके पूरा होने से जीवनी शक्ति अर्थात् आत्मा को रोग लगते हैं, जीवनी शक्ति दुर्बल होती है। रोगों का निदान न हो सके, तो जीवनी शक्ति दुर्बल होते-होते एक दिन मृत्यु को प्राप्त होती है। इस अमूल्य तथा परमावश्यक ज्ञान के साथ-साथ उच्च भावों, उच्च संवेदनाओं तथा उच्च विवेक की भी बहुत आवश्यकता है, जिसको पाकर कोई मनुष्यात्मा सुरक्षित तथा लम्बा जीवन जी सकती है तथा यदि पूर्ण योग्यता लाभ कर सके, तो अमर जीवन भी पा सकती है।

अत: जीवित रहने की प्रबल आकांक्षा की पूर्ति हेतु हमें प्रकृति के विकासकारी तथा विनाशकारी विश्वव्यापी अटल नियमों का ज्ञान तथा बोध पाने की बहुत आवश्यकता है। अपने जीवन को विनाशकारी नियमों की सीमा से बाहर निकालने तथा विकासकारी नियमों की सीमा में लाकर जीवन व्यतीत करने का अभ्यास करना चाहिए। यह अद्बितीय कार्य किसी सीमा तक तभी पूरा हो सकता है, यदि हम हर पल उच्च भावों, उच्च संवेदनाओं तथा उच्च विवेक को सदा जागृत रखें तथा इन्हीं के अनुसार जीवन व्यतीत करने का निरन्तर प्रयास करते रहा करें। यदि कोई महा सौभाग्यवान व्यक्ति इस प्रयास में सफल हो सके, तो वह एक सीमा तक अमर जीवन लाभ करने के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। यह प्रयास 'विज्ञानमूलक सत्यधर्म के संस्थापक परम पूजनीय भगवान्' की शरण में आये बिना कदापि पूरा नहीं हो सकता। काश, हम सबको भगवान् देवात्मा के देव प्रभाव प्राप्त हो सकें तथा हमारे भले तथा कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके।

-चन्द्रगुप्त (अम्बाला शहर)

सूर्य की किरणों को और सत्य को किसी बाहरी स्पर्श से बिगाड़ना असम्भव है।

एक सेवक का पत्र

परम श्रद्धेय परम पूजनीय भगवान् देवात्मा जी, आपका शुभ हो!

भगवन् में आपके चरणों में यह पत्र लिख रहा हूँ क्योंकि आपकी शिक्षाओं का कोई भी मुकाबला नहीं कर सकता। आपके द्वारा बताई गयी हर बात एक दम स्पष्ट एवं स्वयं सिद्ध है। आप चारों जगतों को एक समग्र अटूट श्रृंखला के रूप में देखते हैं, जो पूर्ण रूपेण सुसंगत है। आपने स्वयं के असाध्य श्रम और खोज के द्वारा आध्यात्मिक शिखर को छू लिया। वैसे तो संसार में आपसे पहले न जाने कितने संत व बुद्ध पुरूष हो चुके थे। लेकिन जहाँ तक उनका अनुभव व ज्ञान था, वहीं तक वह शिक्षा बता पाये। आपने अपने श्रम व जीवन से यह सिद्ध किया कि पौराणिक शिक्षा मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने में असफल थी। कल्पना मात्र थी। उससे मनुष्य पापों से मुक्त नहीं हो सकता। आपने स्वयं अनुभव किया कि पूजा पाठ व तीर्थों से पाप से मुक्ति नहीं मिल सकेगी। जब तक मनुष्य का लक्ष्य सुखमूलक रहेगा, तब तक असत्य व अशुभ का वो साथी रहेगा।

जब मनुष्य का लक्ष्य शुभ पर आधारित होगा, तभी कल्याण होगा। इस सत्य को उजागार करने के लिए आपने एक जीवन व्रत लिया। 'सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे।' इस लक्ष्य के द्वारा आपने अपने जीवन से दिखा दिया कि नीच गति व नीच रागों के रहते मनुष्य धर्मवान का नहीं बन सकता। यदि जीवन उच्च बनाना है, तो अपने जीवन का प्रतिदिन हर क्षण निरीक्षण करना होगा। क्योंकि नीच गतियाँ व नीच घृणा मनुष्य का पग-पग पर पतन करते हैं तथा उच्च लक्ष्य से भटकाते हैं। आप निर्भीकतापूर्वक अपने लक्ष्य पर अडिग रह कर चलते रहे, संसार की समस्त बुराई व झूठ का विरोध करते रहे। आपने परेशानी की कोई परवाह नहीं की। आपने अपने अनुभव व खोज के द्वारा एक विज्ञानमूलक धर्म शिक्षा की खोज की। दुनिया को बताया कि प्रकृति ही सत्य है। प्रकृति के नियम अटल हैं। इन्हीं नियमों के द्वारा सारे छोटे-बड़े अस्तित्व संचालित होते हैं। प्रकृति का कोई सृष्टा नहीं है। यह प्रकृति सदा से है और सदा रहेगी।

आपकी शिक्षा ही मनुष्य को उच्च जीवन जीने के लिये प्रेरित करती है। भगवन् मैंने भी आपकी शिक्षाओं को समझने का कुछ प्रयास किया। आपकी ज्योति पाने का प्रयास किया। आपके बताये साधनों से मेरे जीवन में सुधार आना शुरू हुआ। और जीवन बदलता गया। उच्च जीवन की आशा जगी है।

अच्छी पुस्तक वह है, जो आशा से खोली जाए और लाभ से बन्द की जाए।

इसलिए हे भगवन् मैं आपके इस महान् कार्य के लिए आपको धन्यवाद देता हूँ और आपकी शिक्षाओं को ग्रहण करने के लिए प्रयासरत हूँ।

मेरा सौभाग्य है कि मैं आप जैसे सच्चे गुरु की शरण में आ गया हूँ। मैं औरों को भी आपके मिशन से जोड़ने का प्रयास करूँगा, जिससे लोग लाभ उठा सकें, अपना भला कर सकें।

आपका एक तुच्छ सेवक

सफलता का गणित

महान् वैज्ञानिक एडिसन उन दिनों एक प्रयोग में जुटे थे। अपनी सहायता के लिए उन्होंने एक युवक को रखा हुआ था। युवक एडिसन का साथ पाकर बेहद ख़ुश था। वह जी लगाकर काम कर रहा था। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, प्रयोग में सफलता न मिलने के कारण वह हतोत्साहित होता गया। उसे लग रहा था कि इस प्रयोग को छोड़ देना ही बेहतर है। पर यह बात एडिसन को कहने का साहस वह नहीं जुटा पा रहा था। एडिसन धैर्य के साथ उस प्रयोग को करते जा रहे थे।

एक दिन उस युवक से रहा नहीं गया। उसने अपनी निराशा उनके सामने व्यक्त कर ही दी। उसने कहा, ''इतना समय हो गया प्रयोग करते। पर एक बार भी सफलता नहीं मिली। मुझे इस काम से छुटकारा दें।'' इस पर एडिसन बोले, ''सफलता के नजदीक आकर तुम ऐसी बात कर रहे हो?'' युवक ने कहा, '' सफलता कहाँ? वह तो आज भी उतनी ही दूर है, जितनी पहले थी।'' इस पर एडिसन ने कहा, '' लगता है तुम्हें गणित की जानकारी नहीं है। इतने तरीक़े हमने आजमाए, सब बेकार गए। मतलब बेकार तरीक़े कम हो गए। अगर हल करने के तीन सौ तरीके हैं, तो दो सौ बेकार गए। अब हमारे पास केवल सौ तरीके बचे हैं। फिर धीरे-धीरे उसमें से भी बेकार तरीके कम होते जाएंगे। यानी हम सफलता के और नजदीक पहुँच रहे हैं और तुम कह रहे हो कि हम असफल हो रहे हैं।'' एडिसन के इन शब्दों से युवक में जोश आ गया। वह मन लगाकर काम करने लगा।

वही सफल होता है, जिसका काम उसे निरन्तर आनन्द देता रहता है।

कृतज्ञता सुमन

नाम- सुदेश खुराना
पता-1023-गली नं0 7, गुरु अर्जुन देव नगर, लुधियाना (पंजाब)
मो0-80542-66464
माता- श्रीमती विद्यावन्ती जी
पिता- श्री माला राम कालड़ा जी
जन्म तिथि- 03.06.1959
जन्म स्थान- ग्राम चकौनी, जिला उद्यम सिंह नगर

मेरे पिताजी जी एक निहायत सादे सरल इन्सान थे। आपने पहले मोगा में एक गुरुजी से और बाद में राधास्वामी मत से भी दीक्षा ली। माता जी ईमानदार व सत्यभाषी महिला थीं। उन्होंने बहुत अभावों में मेहनत करके हमें पाला था। मैं जब छोटी सी थी, तभी से वह राधास्वामी मत से जुड़ी हुई थीं। हमारे परिवार के बहुत से लोगों को उन्होंने इस मत से जोड़ा था। जब व्यास में आँखों का कैम्प लगा करता था, तो मैं भी बचपन में उनके साथ जाया करती थी। भगवान् देवात्मा की शिक्षा से मेरा परिचय मई 1981 ई. में हुआ, जब मेरी शादी श्री अशोक जी से हुई। सम्माननीय श्रीमान् जवाहर लाल जी व आपका परिवार हमारे घर कस्बा बेहट, ज़िला सहारनपुर में अक्सर आता था, मगर शराब की लत की वजह से धर्मपति समाज से जुड़ नहीं पाए। मैं भी अपनी परेशानियों में रहती थी तथा घर में भी बहुत अभाव था। बच्चों को कैसे पालें, यह भी बहुत बड़ी समस्या थी। मैंने अप्रैल 1982 ई. में एक गुरु से जिनसे अशोक जी व इनकी माता जी जुड़े हुए थे, नामदान की दीक्षा ली, लेकिन 14 साल तक जुड़े रहने से कोई लाभ न होता देखकर राधास्वामी मत से जुड़ गई। जुलाई 1995 में हम लुधियाना आ गए, श्रीमान् जी हमारे भले के लिए यहाँ भी आते रहे। घर में बहुत बुरा हाल था। नशे ने सब रिश्ते ख़राब कर दिये थे। आर्थिक तंगी थी। मैं खुद जॉब करती थी और मेरी बेटियाँ भी जॉब करती थीं। 2013 ई. में हम भगवान् के जन्म दिन पर रुड़की आए, तब से हालात बदलने शुरू हुए। मुझ तुच्छ के विनाशकारी जीवन में भगवान् देवात्मा की शिक्षा का सुन्दर प्रवेश तभी से हुआ।

भगवान् देवात्मा को पिछले कई वर्षों से जानते हुए भी मैं अनजान थी, मानो बेहोशी की अवस्था में थी। जीवन में सजगता नहीं थी। अपने ही दुःखों में दुःखी, एक अबला के जैसा जीवन व्यतीत करती थी। तन-मन-धन से अति दुर्बल, नीच वातावरण से घिरी, शक्तिहीन तथा बिना लक्ष्य का जीवन जी रही थी। जीवन क्या है, जीवन का

कायर तभी धमकी देता है, जब सुरक्षित होता है।

लक्ष्य क्या है? कुछ सुध नहीं थी। क़िस्मत अच्छी थी कि भगवान् देवात्मा की पर-हित की प्रबल इच्छा ने श्रीमान् जवाहर लाल जी व श्री नवनीत जी को माध्यम बनाया तथा मेरे धर्मपति इस पावन, पवित्र एवं सुन्दर गुरुद्वार पर पहुँचे, जिससे हमारी काया पलट गई। रुह बदली, रुह का सामान बदला। नज़र बदली, तो नज़ारे बदल गए। उपकारियों के उपकार नज़र आने शुरू हो गए। सम्बन्धों में मेल हुआ, पाप नज़र आये तथा कुछ हानि परिशोध किये। श्रद्धेया माताजी की अच्छी पूँजी थी, इनके प्रति कितनी ही ग़लतियाँ नज़र आईं। माफ़ी का सिलसिला चल निकला। रोज़ अपनी माताजी के उपकारों को याद करके अश्रु बहाती हूँ और अपने द्वारा की गई ग़लतियों के लिए बारम्बार माफ़ी माँगती हूँ और माता-पिता के लिए अश्रुपूर्ण आँखों से शुभकामना करती हूँ, अच्छा लगता है। मन की मैल धुलती है यह सब करामात भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों का है। सेवा भाव से अभावग्रस्त बच्चों के एक स्कूल में जाकर सेवा करने लगी हूँ, वहाँ पर बहुत से बच्चे मुझे प्यार करते हैं। अब तो राह चलते हुए बच्चे भी बोलते हैं 'आंटी जी शुभ हो!' मैं बच्चों को जानती नहीं, किन्तु बच्चे मुझे पहचानते हैं। कई बच्चों ने माँस व अण्डे खाना छोड़ दिया है। साफ़-सुथरा रहना शुरू कर दिया है। ये सब भगवन् के करिश्में हैं। भगवान् का बहुत दान मिलता है, जिसको पाकर हम धन्य-धन्य हो जाते हैं। मुझमें मानसिक शक्तियों का भी विकास हुआ है। दुनिया कुछ बदली सी लगती है, क्योंकि नज़र बदल गई है। मिथ्या विश्वास चारों तरफ फैले हुए हैं। जब स्त्रियों से इस बारे में बात करती हूँ तो वे बोलती हैं 'बस एक रिवाज़ बना हुआ है'। मैं बोलती हूँ, 'क्यों इतना पैसा, समय और आत्मिक धन की हम हानि करते हैं।' बातें तो उन्हें अच्छी लगती हैं, मगर जो कुछ उनके आस-पास होता है, लोग फिर वैसा ही करते हैं। किन्तु मिथ्या विश्वासों से निकलकर मैं तो धन्य-धन्य हो गई हूँ। कमियाँ अभी भी बहुत हैं, आत्मबल की कमी है तथा तन-मन-धन से दुर्बल हूँ। पहले की अपेक्षा निःसन्देह सबल हूँ, यह सब भगवान् देवात्मा की अमूल्य देन है। कुर्बानियाँ देने वाले और घोर दुःख सहने वाले भगवान् के दुःखों का अन्त नहीं। विलाप करते हुए भगवान् देवात्मा के जीवन से न केवल शुभ और सत्य का ही उदय नहीं हुआ, बल्कि सम्पूर्ण मानवजाति और चारों जगतों का भला भी हुआ है। एक-एक क्षण दुःखों में गुज़ार कर चारों जगतों को सुख देने वाला आज तक कोई पीर-पैग़म्बर, गुरु आदि इस धरती पर नहीं आया, वह केवल भगवान् देवात्मा हैं, जिन्होंने अपना जीवन, तन-मन-धन तथा मान-सम्मान आदि सब कुछ पर-हित के लिए दाँव पर लगा दिया। सम्बन्धों को

धनवान होते हुए भी जिसकी धन की इच्छा दूर नहीं हुई,
वही सबसे बड़ा ग़रीब है।

भी अगर ज़रूरत पड़ी, तो तिलाजंलि दे दी। कितनी सही हैं यह पंक्तियाँ-

धन्य हैं देवगुरु भगवान्, धन्य हैं देवगुरु भगवान्।

सत्य और शिव सुन्दर जिनका, महालक्ष्य और रूप महान्।।

भगवान् देवात्मा की रोशनी में ही नज़र आया कि हम चारों जगतों की बदौलत हैं। हम चारों जगतों के ऋणी हैं। इसलिए हमें चारों जगतों के लिए शुभकामना करनी चाहिए और उनके प्रति सेवाकारी होना चाहिए। जब हम चारों जगतों से और सब उपकारियों से इतना उपकार पाते हैं, तो हमारे अन्दर अहम् भाव नहीं होना चाहिए। घृणा और ईर्ष्या की भावना नहीं होना चाहिए, जो अक्सर हम में पाई जाती है। जो कुछ सीखा है, पाया है, भला हुआ है, उसका वर्णन कर पाना मेरे बस में नहीं है।

– सुदेश खुराना (लुधियाना)

अच्छे और बुरे लोग

एक अजनबी मुसाफिर किसी गाँव में पहुँचा। वहाँ उसने एक बुजुर्ग से सवाल किया, ''इस गाँव के लोग कैसे हैं? क्या वे अच्छे हैं?'' बुजुर्ग ने अजनबी के सवाल का सीधे जवाब नहीं दिया, उल्टे एक सवाल कर दिया, ''तुम कहाँ से आए हो, वहाँ के लोग कैसे हैं?'' अजनबी अत्यन्त दु:खी होकर बोला, ''मैं क्या बताऊँ। मेरे गाँव के लोग अत्यन्त दुष्ट हैं, इसलिए मैं वह गाँव छोड़कर आया हूँ। लेकिन, आप यह क्यों पूछ रहे हैं?'' बुजुर्ग बोला, ''मैं भी दु:खी हूँ। इस गाँव के लोग भी तुम्हारे ही गाँव वालों जैसे हैं, बल्कि उससे भी ज़्यादा बुरे।'' तभी एक और राहगीर आ गया। उसने भी बुजुर्ग से वही सवाल किया, ''इस गाँव के लोग कैसे हैं?'' बुजुर्ग ने फिर उल्टा सवाल दाग दिया, ''तुम बताओ कि जहाँ से आए हो, वहाँ के लोग कैसे हैं?'' राहगीर के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। उसने कहा, ''मेरे गाँव के लोग इतने अच्छे हैं कि उन्हें याद करके ही सुख मिल रहा है।'' उसकी आँखें गीली हो गईं। उसने कहा, ''मुझे गाँव छोड़ने का दु:ख है। लेकिन रोजगार की तलाश यहाँ तक ले आई है। इसलिए पूछ रहा हूँ कि वह गाँव कैसा है?'' बुजुर्ग ने कहा, ''दोस्त, यह गाँव भी वैसा ही है। यहाँ के लोग भी बहुत अच्छे हैं।'' वास्तव में मनुष्यों में भेद नहीं होता। जिनके सम्पर्क में हम आते हैं, वे हमारी ही तरह हो जाते हैं। अच्छे के लिए अच्छे और बुरे के लिए बुरे। यह संसार एक दर्पण है, जिसमें हमें अपनी ही छाया दिखाई देती है।

सच्चे मित्र उन्हीं को मिलते हैं, जो दूसरों के दु:ख में दु:खी होते और हाथ बँटाते हैं।

सद् कार्य

मानव जीवन अन्य तीन जगतों (भौतिक, वनस्पति, पशु) की अपेक्षा सबसे श्रेष्ठ है, क्योंकि इसकी मानसिक शक्तियाँ सबसे अधिक विकसित हैं। इन उन्नत मानसिक शक्तियों के कारण यह अपने विवेक का प्रयोग करते हुए एक अच्छे उद्देश्य के लिये कार्य कर सकता है।

यद्यपि मनुष्य अपने जीवन को दीर्घ समझता है, परन्तु किसी वृद्ध से पूछिये तो बतायेगा कि बालपन और युवावस्था कब बीत गई पता ही नहीं चला। शरीर की क्षमता कब क्षीण हो गई और बुढ़ापा आ गया, आभास नहीं होता। शरीर की नश्वरता का ज्ञान सबको है, लेकिन प्रायः मनुष्य इसका सदुपयोग करना तो दूर, इसके पोषण और संवारने में तरह-तरह के खराब कार्यों को भी करता रहता है। इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि समय रहते हुये इसको सद् कार्यों में प्रयोग कर जीवन को सार्थक न किया जाये।

वह सद् कार्य कौन से हैं? इसके बारे में कहा गया है कि जिनसे सब का हित हो, भला हो, मंगल हो, जो कार्य सत्य से पूर्ण हों, तथा जिनकी सम्पूर्ण समाज प्रशंसा करता हो, वे सद् कार्य हैं। इन्हें हम दो भागों में बाँट सकते हैं। पहला किसी सद्गुरु इष्ट के मार्गदर्शन में साधना द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त करना एवं आत्म बल बढ़ाना। दूसरा माता-पिता, गुरु, अतिथि, वृद्ध एवं बीमार की सेवा, भूखे को भोजन, अशिक्षित को शिक्षा, बीमार को दवा आदि की अपनी सामर्थ्य के अनुसार व्यवस्था करना। यह शरीर किस काम का यदि दूसरों के काम न आ सके। मनुष्य कितना भी विद्वान क्यों न हो, बलशाली हो, पूजा-पाठ करता हो, परन्तु सामने वाले के आँसू न पोंछता हो, किसी विपत्ति में पड़े हुये की मदद नहीं कर सकता, तो उसका जीवन किस काम का? इसलिये हमें एक क्षण भी व्यर्थ न करते हुये यथाशक्ति अपने जीवन में शुभ, सद् कार्यों द्वारा दूसरों की सेवा करनी चाहिये, तभी जीवन की सार्थकता है।

शरीर को ज़िन्दा रखने के लिए जैसे हमें प्रतिदिन खाना खाने की आवश्यकता है, वैसे अपने आत्मा का हित करने के लिए प्रतिदिन निज का सच्चा साधन करने की नितान्त आवश्यकता है।

हम अपनी ही मूर्ख कल्पनाओं के संसार में पड़कर दुःखी हैं।

मेथी

शरीर के उचित विकास के लिए और उसे स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार सबसे ज़रूरी है। पर, समस्या यह है कि आजकल की व्यस्त दिनचर्या में हम अपनी डाइट को सबसे ज़्यादा नजरअंदाज करते हैं और परिणामस्वरूप तरह-तरह की बीमारियों के शिकार भी होते हैं। बेहतर स्वास्थ्य के साथ बेहतर सौंदर्य पाना हम सभी को ख्वाहिश रहती है। हमारी इन ख्वाहिशों को पूरा करने के लिए प्रकृति ने हमें साग-सब्जियों के रूप में कई सारी जड़ी-बूटियाँ प्रदान की हैं, जो हमारे सौन्दर्य व स्वास्थ्य दोनों के लिए फायदेमन्द होती हैं। मेथी एक ऐसी ही साग-सब्जी है। हमारी सुन्दरता व स्वास्थ्य दोनों का सम्बन्ध सीधे तौर पर हमारे पेट से होता है। पेट की गड़बड़ियों से त्वचा पर फुंसियाँ निकलना, त्वचा की चमक का कम हो जाना और एसिडिटी जैसी समस्याएँ पैदा होती हैं। मेथी हाज़मे को दुरुस्त रखने में मदद करती है और परिणामस्वरूप पेट की गड़बड़ी से पैदा होने वाली समस्याओं से भी सुरक्षा कवच प्रदान करती है।

हरी पत्तेदार सब्जियों में मेथी एक ऐसी सब्जी है, जो स्वास्थ्य व सौन्दर्य दोनों ही दृष्टि से गुणकारी व फायदेमन्द होती है। मेथी के पत्ते व बीज (मेथीदाना) दोनों का उपयोग औषधि के रूप में होता है। मेथीदाने स्वाद में कड़वे होते हैं, परन्तु इसके चूर्ण का उपयोग कई बीमारियों में औषधि के रूप में किया जाता है।

मेथीदाने में फॉस्फेट, लेसिथिन और न्यूक्लिओअलब्यूमिन जैसे पोषक पदार्थ होते हैं। साथ ही इसमें फॉलिक एसिड, मैग्नीशियम, सोडियम, जिंक, कॉपर आदि पोषक पदार्थ भी होते हैं। मेथी में प्रोटीन की मात्रा भी बहुत अधिक होती है। यह हमारे शरीर की पाचनशक्ति को दुरुस्त रखती है और भूख को भी बढ़ाती है।

अपच, डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, साइटिका आदि बीमारियों में मेथी के बीज बहुत ही फायदेमन्द होते हैं।

मेथी फैटी एसिड को कम करने में भी मददगार होती है। फैटी एसिड मोटापे के लिए ज़िम्मेदार होता है। बुखार के बाद आमतौर पर होने वाली समस्याओं को दूर करने में भी मेथी उपयोगी होती है। मेथी लीवर के फंक्शन को ठीक करने में भी मदद करती है। यही वजह है कि जॉन्डिस होने पर कुछ दूसरी जड़ी-बूटियों के साथ मेथी का सूप बनाकर भी मरीज को दिया जाता है। मेथी में शरीर में इकट्ठा हुए विषाक्त पदार्थों को निकालने की भी क्षमता होती है। मेथी और कुछ अन्य जड़ी-बूटियों को मिलाकर तैयार किए गए पेस्ट को त्वचा पर लगाने से जलन और सूजन दोनों को दूर करने में

मृत्यु आकर तुम्हें जगावे, उसके पहले जाग जाओ।

मदद मिलती है।

मेथी पाचन नली में होने वाले अल्सर को ठीक करने में भी उपयोगी साबित होती है। ऐसा माना जाता है कि मेथी पाचन नली को एक सुरक्षात्मक ढाल प्रदान करती है, जिससे जलन आदि को दूर करने में मदद मिलती है।

एक चम्मच मेथी के दाने को रात भर पानी में भिगोकर, सुबह उसे खाली पेट पीने से ब्लड शुगर को नियन्त्रित रखने में मदद मिलती है।

गर्भावस्था के दौरान मेथी का नियमित सेवन करने से शरीर में आयरन की मात्रा बढ़ती है।

गुलाब का आयुर्वेदिक उपयोग

- ❖ कान में दर्द हो, तो गुलाब के फूल का ताजा रस कान में टपकाना चाहिए।
- ❖ दाद पर गुलाब के अर्क में नींबू का रस मिलाकर लेप करना चाहिए।
- ❖ अधिक प्यास लगती हो, तो गुलकन्द का शर्बत बनाकर दिन में दो बार पीना चाहिए।
- ❖ सिरदर्द में, शीशी में दो दाना इलायची, एक चम्मच मिश्री, 10 ग्राम गुलाब की पत्तियाँ पीस कर प्रातः बासी मुँह खायें।
- ❖ आधे सिर में दर्द हो तो एक ग्राम नौसादर को 12 ग्राम असली गुलाब जल में मिला लीजिए। शीशी में भरकर मिलाइए। रोगी की नाक में चार पाँच बूँद टपका दीजिए। फिर बैठ जाइए थोड़ी देर में चमत्कारी आराम होगा।
- ❖ स्त्रियों के प्रदर (लिकोरिया), पेशाब में जलन आदि रोगों के लिये गुलाब के दस ग्राम पत्तों को पीसकर मिश्री मिलाकर दिन में दो से तीन बार पीना चाहिए।
- ❖ मुँह में छाले हों, तो गुलाब को उबालकर ठंडा कर उसके पानी से कुल्ले करें।
- ❖ गुलाब का पूरा फूल कुचल कर खाने से मसूड़ों से खून या मवाद आना बन्द होता है तथा मज़बूती आती है।
- ❖ दुर्गन्धयुक्त पसीना आता हो, तो गुलाब के फूलों को पीसकर पानी में घोलकर पूरे शरीर पर लेपकर थोड़ी देर बाद स्नान करना चाहिए।

प्रसन्नता अनमोल ख़ज़ाना है। छोटी-छोटी बातों पर उसे लुटने न दें।

CLUES TO HAPPINESS

Having lived a reasonably contented life, I was musing over what a person should strive for to achieve happiness. I drew up a list of a few essentials which I put forward for the readers' appraisal.

1. First and foremost is GOOD HEALTH.

If you do not enjoy good health, you can never be happy. Any ailment, however trivial, will deduct from your happiness.

2. Second, A HEALTHY BANK BALANCE.

It need not run into crores but should be enough to provide for creature comforts and something to spare for recreation, like eating out, going to the pictures, travelling or going on holidays on the hills or by the sea. Shortage of money can be only demoralizing. Living on credit or borrowing is demeaning and lowers one in one's own eyes.

3. Third, A HOME OF YOUR OWN.

Rented premises can never give you the snug feeling of a nest which is yours for keeps that a home provides if it has a garden space, all the better. Plant your own trees and flowers, see them grow and blossom, cultivate a sense of kinship with them.

4. Fourth, AN UNDERSTANDING COMPANION, be it your spouse or a friend. If there are too many misunder standings, they will rob you of your peace of mind.

5. Fifth, LACK OF ENVY towards those who have done better than you in life; risen higher, made more money, or earned

It is greater to give a handful of rice with love and honesty than to give a thousand dollars with the desire for name and fame.

more fame. Envy can be very corroding; avoid comparing yourself with others.

6. Sixth, DO NOT ALLOW OTHER PEOPLE TO DESCEND ON you for Gupshup. By the time you get rid of them, you will feel exhausted and poisoned by their gossip-mongering.

7. Seventh, CULTIVATE SOME HOBBIES which can bring you a sense of fulfilment, such as gardening, reading, writing, painting, playing or listening to music. Going to clubs or parties to get free drinks or to meet celebrities is criminal waste of time.

8. Eighth, every morning and evening, devote 15 minutes to INTROSPECTION. In the morning, 10 minutes should be spent on stilling the mind and then five in listing things you have to do that day. In the evening, five minutes to still the mind again, and ten to go over what you had undertaken to do.

- **Relations can not be made with conditions, they are maintained by faith and hope. So do not make life as a deal, but live it with a great feel.**
- **Resolve to perform what you ought. Perform without fail what you resolve.**
- **The greatest gift you can give to someone is your time. Because it is like giving a portion of your life that you can never get back.**

Kindness is the language which the deaf can hear and the blind can see.

आपने कहा था

.....गतांक से आगे

(भगवान् देवात्मा की वाणी के अंश)

12 मार्च सन् 1915 ई0

देवात्मा की शक्तियों का कार्य कैसा विलक्षण! बिना सत्यधर्म की ज्योति के मनुष्यात्माओं में विकासकारी उच्च परिवर्तन नहीं आ सकता और नहीं जारी रह सकता, इसलिये मैं यह आकांक्षा करता हूँ कि-

जीवन तत्व की ज्योति फैले, जीवन बल चहुं दिग वितरण हो;

अधिकारी जन उच्च बनें सब, सत्यधर्म का बोध उत्पन्न हो।

मेरी ज्योति और मेरे बल से अधिकारी आत्माओं का अन्धकार नष्ट होता है। उनको अपनी-अपनी नीच गतियों का बोध होता है। उनके भीतर उनकी अपनी-अपनी योग्यतानुसार कोई उच्च भाव पैदा होता है। एक-एक अधिकारी आत्मा का जहाँ तक कोई नीच भाव नष्ट हुआ है और उसमें कोई उच्च भाव पैदा हुआ है, वहाँ तक उस पर मेरा संग्राम सफल हुआ है। ऐसा हो कि मेरी आकांक्षा के अनुसार जहाँ तक सम्भव हो, शुभ आवे हित आवे और आत्माओं में सत्यधर्म का बोध उत्पन्न हो।

मनुष्य को पैदायश से ही सुख दुःख के बोध मिले हैं। जब बच्चे को भूख लगती है, तो वह कष्ट बोध करता है और रोता है। भूख के निवारण होने पर वह आराम की हालत में आ जाता है। इसी तरह उसमें धीरे-धीरे एक वा दूसरे अंग में अपनी हानि का बोध भी पैदा होता है। जिस पहलू में बोध पैदा हो जाता है। उस पहलू में हानि होगी, तो दुःख पैदा होगा, वरना नहीं। धन का बोध पैदा हो गया है, तो उसकी हानि से दुःख उत्पन्न होगा। यदि किसी में पर कष्ट अनुभूति का बोध नहीं पैदा हुआ है, तो वह किसी को क्लेश पहुँचाकर भी कोई तकलीफ़ बोध नहीं करेगा, बल्कि ख़ुश रहेगा।

एक-एक जन की यह आकांक्षा होती है कि मैंने यदि किसी को हानि पहुँचाई है, किसी को कष्ट दिया है, तो उसका किसी को पता न लगे। मेरी बदनामी न हो। मैंने जो चोरी की है, वह चोरी का माल मेरे पास ही रहे। मुझे कोई चोर न समझे और मुझे चोर न कहे। मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई बात न हो। मैं किसी के काम न आऊँ, बाकी सब मेरे काम आवें। कई मिथ्या विश्वासी कहते हैं-श्वांस श्वांस पर राम कहो, राम बिना नहीं कोए, क्या जाने इस श्वांस का आवन होए न होए। स्वार्थी मनुष्य श्वांस-श्वांस पर सुख चाहता है सुख उसका जाप है सुख उसका मूल मन्त्र है।

एक-एक जन चाहता है कि वह कैसा ही अबोध, नीच, बदमाश हो, मगर उसे

आज वर्तमान है उसे ही देखिए, उसे ही संवारिए,
यही कल की सफलता है।

कोई बुरा न कहे। एक-एक सती स्त्री से भी वह चाहता है कि वह उसके नीच सुख में रोक न बने। एक-एक जन जिस स्त्री के साथ शादी करना चाहता है, वह स्त्री यदि उसके साथ शादी न करे, तो वह उसको बहकाता है, धमकी देता है, यहाँ तक कि अनेक बार उसको मार देना चाहता है। मनुष्य की सुख अनुरागी प्रकृति कैसी अधम प्रकृति!

जहाँ मनुष्य की ऐसी सुखपरायण अवस्था है, वहाँ देवात्मा सत्य और शुभ के पूर्ण प्रेमक होकर उसी खातिर हर एक दुःख को अपने ऊपर लेने के लिये तैयार रहते हैं। देवात्मा चाहते हैं कि किसी के शुभ के लिये मुझ पर जो भी मुसीबत आवे, वह आवे। मैं अपने उच्च लक्ष्य को कभी छोड़ नहीं सकता। तुम चाहे मेरे साथ जो सलूक करना चाहो, वह करो, परन्तु मैं अपने लक्ष्य से कदापि नहीं फिरूँगा। क्या मनुष्यात्मा और देवात्मा के जीवन के फल एक प्रकार के हैं? कदापि नहीं। मनुष्यात्मा का जीवन मन्त्र सुख और केवल सुख है। देवात्मा का जीवन मन्त्र सब प्रकार का शुभ और सब प्रकार का सत्य है। दोनों की कोई तुलना नहीं हो सकती।

अब तुम खुद देखो कि दोनों के जीवनों का नेचर अलग-अलग क्या अन्तर दिखाती है। नेचर का यह अटल नियम है कि तुम किसी का माल मारो, उसकी हानि करो, तो वह चाहे तुम्हारी कोई हानि न भी करे, तो भी तुम अवश्य विनष्ट हो रहे हो। किसी को कष्ट पहुँचा कर तुम चाहते हो कि वह तुम्हें घृणा न करे, परन्तु जिसको कष्ट मिला है, उसके अन्दर हानिकर्त्ता के प्रति अवश्य विकर्षण पैदा हो रहा है। तुम्हारे केवल चाहने से क्या होगा? होगा वही जो नेचर का अटल नियम है। जिसके सामने यह हक़ीक़त खुल जाती है, वह शायद किसी के सम्बन्ध में पहुँचाई हुई हानि को दूर करने का यत्न करे।

नेचर के अटल नियम के अनुसार किसी भी गति का फल लाज़मी और ज़रूरी मिलेगा। एक अंग ने दूसरे को हानि पहुँचाई है, तो उसका फल उसको अवश्य मिलेगा। किसी तुच्छ से तुच्छ हस्ती के सम्बन्ध में यदि कोई घृणा करता है, तो उसके नतीजे से वह बच नहीं सकता। हो सकता है मनुष्य अपने घमंड में परवाह न करे, परन्तु नेचर उसे अवश्य कुचल देगी।

श्रीमान् निर्मल सिंह जी की डायरी से (क्रमश.)...

फलदार वृक्ष और गुणवान मनुष्य झुकते हैं, पर सूखी लकड़ी और मूर्ख व्यक्ति नहीं झुकते।

देव जीवन की झलक

.....गतांक से आगे

स्त्रियों के लिए हित विषयक संग्राम की एक विशेष घटना

फिर व्यवस्थापक कौंसिल में बहुत वादानुवाद के बाद जब यह कानून पास हो गया, तब श्री देवगुरु भगवान् ने उसकी ख़ुशी में देवाश्रम के बड़े हाल में 26 मार्च 1891 ई. को एक बहत बड़ी सभा की, जिसमें हिन्दुओं के भिन्न मुसलमान आदि सब प्रकार के देशीय भद्रजन उपस्थित थे। इस जलसे के एक भद्रजन सभापति और श्री देवगुरु भगवान् सेक्रेटरी थे। इसमें सर्व सम्मति से जो मन्तव्य (रैज़ोल्यूशन) पास हुए, उनमें से तीन नीचे लिखे जाते हैं–

पहला मन्तव्य

जिसे श्री देवगुरु भगवान् ने उपस्थित किया था–

'यह पब्लिक सभा गर्वनमेंट ऑफ इण्डिया के उस न्यायमूलक सलूक और मेहरबानी के लिए हृदयगत गहरी कृतज्ञता का प्रकाश करती है जो उसने उम्र रज़ामन्दी के बिल को पास करके कुल इण्डिया पर साधारण रूप से और इस देश की स्त्रियों पर विशेष रूप से किया है और शासन विशयक जिस शुभ नियम को अवलम्बन करके उसने इस देश की असहाय स्त्रियों के अधिकार की रक्षा में यह कानून पास किए हैं, उनका पूरे ज़ोर और सरल भाव से समर्थन करती है।'

दूसरा मन्तव्य

'यह पब्लिक सभा इस देश के ऐसे सब जनों के लिए कि जो न्याय के पक्षपाती होकर इस देश की सामाजिक बुराइयों के दूर करने की चेष्टा करते हैं, और जिन्होंने इस कानून के पास कराने में कोशिश की है, विशेष रूप से और इस कानून के साधारण पक्षपातियों के लिए साधारण रूप से, अपने हृदयगत कृतज्ञ भाव का प्रकाश करती है, और उन सबको इस कानून के पास होने पर हर्षपूर्वक मुबारकबाद देती है।'

तीसरा मन्तव्य

'यह सभा ऐसे कुल लोगों के प्रति जिन्होंने अपनी उल्टी समझ व स्वार्थपरता से अन्धे होकर न्याय के पक्ष को छोड़कर और हमारी पद दलित स्त्री जाति के उचित अधिकारों की परवाह न करके, उपरोक्त कानून की मुख़ालिफ़त की है, अपने गहरे शोक का प्रकाश करती है।'

इन सब मन्तव्यों की नकल एक चिट्ठी के साथ गवर्नमेण्ट की सेवा में भेजी

हमारी रुचि हमारे जीवन की कसौटी है
और हमारे मनुष्यत्व की पहचान है।

गई थी।

इसी कानून के पास हो जाने की ख़ुशी में लाहौर शहर में एक स्त्रियों की सभा की गई कि जिसकी सभापति श्री देवगुरु भगवान् की सेविका श्रीमती कुमारी डॉक्टर प्रेमदेवी थीं। इसमें प्रायः पचास स्त्रियाँ शामिल थीं। इस सभा में गवर्नमेण्ट को धन्यवाद देने के लिए जो मन्तव्य पास हुआ, उसके विषय में पहले एक तार और फिर एक चिट्ठी के साथ वह मन्तव्य गवर्नमेण्ट की सेवा में भेजा गया था।

कई आत्माओं के समीप आते ही उनके हृदय में तत्काल अलौकिक उच्च परिवर्तन

सन् 1884 ई. में जब सम्मान के योग्य परलोकवासिनी श्रद्धेया डॉक्टर प्रेमदेवी जी गुजरांवाले से अपने पिता के साथ लाहौर में श्री देवगुरु भगवान् के दर्शन करने के लिए आईं, तब उनके हृदय पर उनके उपदेश से उनके अद्वितीय देव प्रभावों का ऐसा कार्य हुआ कि उसी समय से उनका जीवन सदा के लिए बदल गया। थोड़ी देर के दर्शन और बातचीत के पीछे ही उनके हृदय में इतना उच्च परिवर्तन उत्पन्न हो गया कि वह जीवनदाता भगवान् को छोड़कर अपने घर जाना नहीं चाहती थीं और वहीं बैठी हुई फूट-फूटकर रोने लगीं और श्री देवगुरु भगवान् की देव शक्तियों ने उनके हृदय में धर्माकांक्षा के भाव को इतने प्रबल रूप से उत्पन्न कर दिया कि फिर उनके सब नीच सम्बन्ध सूत्र उसी समय शिथिल हो गए। तब से उन्होंने धीरे-धीरे जो कुछ उच्च जीवन लाभ किया और अपने जीवन को इस देश की स्त्री जाति के हित के लिए अर्पण करके जिस प्रकार हितकर और अनुकरणीय प्रमाणित किया, वह जहाँ उनके जीवन चरित्र के जानने वालों से छिपा नहीं, वहाँ उसके द्वारा जीवनदाता भगवान् की उद्धारिणी और उच्च गतिदायिनी शक्तियों के प्रभावों का जो कुछ प्रमाण मिलता है, वह भी अद्वितीय है।

**हमें उतनी ही सफलताएं या उपलब्धियाँ मिलती हैं,
जितनी के लिए हम प्रयास करते हैं।**

यदि कोई मनुष्य लगातार अशुभ कर्म करे, तो उसका
अन्तःकरण बुरे संस्कारों से मलिन हो जाएगा।

आत्मा क्या है?

आज देखते हैं कि आत्मा क्या है। आत्मा हमारी जीवनी शक्ति है। यह ऐसी शक्ति है, जो हमारे भौतिक शरीर का निर्माण करती है। हालांकि यह उतनी सही तुलना (apt correlation) नहीं है, लेकिन शंख में जैसे जीवन रहता है, जो अपने बचाव और सुरक्षा के लिए शंख का निर्माण करता है, वैसे ही आत्मा भौतिक शरीर का निर्माण करती है। शंख का आकार-प्रकार उस जीव के लिए बिल्कुल सही होता है- खतरा होने पर वह उस शंख में अन्दर जा सकता है और जब वह उस शंख से बड़ा हो जाता है, तो उससे निकलकर अपने लिए दूसरा शंख बना सकता है। जब तक शंख जीवित होता है, तब तक यह बताना मुश्किल होता है कि जीवन उसमें किस जगह पर है। जीव के लिए शंख खोखला है और वह अपने खतरे को भाँपकर उसके हिसाब से उसके अन्दर या बाहर की ओर आता-जाता रहता है।

हालांकि आत्मिक शरीर का रूप इसके बिल्कुल समान नहीं है, क्योंकि आत्मा भौतिक शरीर के बाहर सिर्फ़ शरीर छोड़ने के समय पर ही आती है, मगर बाकी बातें समान हैं। आत्मा के लिए पूरा भौतिक शरीर खोखला है और वह उसके भीतर कहीं भी हो सकती है। किसी शारीरिक अंग के कट जाने पर या उससे बिल्कुल पहले आत्मा शरीर की सीमाओं में कहीं भी जा सकती है, जहाँ हृदय चल रहा हो, जहाँ फेफड़े हवा दे रहे हों।

आत्मा बिना अपने लिए सूक्ष्म शरीर बनाए, भौतिक शरीर नहीं छोड़ सकती। और एक बार वह सूक्ष्म शरीर बनाकर भौतिक शरीर से बाहर आ जाए, तो वह वापस उसमें प्रवेश नहीं कर सकती। इसलिए, पुनर्जन्म का सिद्धान्त (concept) ग़लत है। सूक्ष्म शरीर बनाने के लिए आत्मा को बहुत समय नहीं चाहिए होता है। देरी अधिकतर मानसिक और आत्मिक बल इकट्ठा करने में होती है। यह शारीरिक से ज़्यादा मानसिक प्रक्रिया (thought based process) है। एक बार आत्मा भौतिक शरीर का त्याग कर दे, फिर वह भावों पर चलती है।

जैसाकि हम पहले भी बता चुके हैं, आत्मा के अंगों का शरीर के अंगों से एक-दर-एक सहसम्बन्ध (one-to-one correlation) नहीं होता है, इसलिए, अगर किसी का हाथ कट जाए, तो उसका मतलब यह नहीं कि उसकी आत्मा (सूक्ष्म शरीर) का भी हाथ नहीं होगा।

शरीर के अन्दर यह स्थानान्तरण कैसे होता है या फिर सूक्ष्म शरीर का निर्माण कैसे होता है, यह समझाना बहुत मुश्किल है। यह इन्सान की समझ से अभी बाहर है।

हे मनुष्य! जोश में आकर इतना जोश-खरोश न दिखा, इस दुनिया
में बहुत से दरिया चढ़-चढ़कर उतर गए, कितने ही
बाग लगे और सूख गए।

इससे दिमाग़ में एकदम से जो ख़्याल आता है, वह यह है कि आत्मा, जो कि शरीर के अन्दर घूम सकती है, तो उस वक़्त क्या होगा, जब वह हादसे के वक़्त उस हाथ में हो, जो हाथ उस हादसे में कट जाए। वास्तव में, ऐसा नहीं होता। कुछ हद तक आत्मा को अपने कुछ समय आगे तक की कुशलता का आभास रहता है। आत्मा को अपने तात्कालिक भविष्य का भान रहता है, भले दिमाग़ उसे नहीं समझ पाता। दूसरी बात यह है कि सहायकारी शक्तियाँ और परलोकवासी सम्बन्धी आत्मा की ऐसे वक़्त पर मदद करते हैं और उसे आने वाले खतरे से आगाह करते हैं। इसलिए, यह बात सुनने में भले अजीब लगे, पर वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर के काफ़ी लोगों की आत्माएँ बनीं हैं, वे सब ख़त्म नहीं हो गई। सहायकारी शक्तियाँ ऐसे हालात के समय नेचर के सन्तुलन को बनाए रखने के लिए अधिक समय तक (**overtime**) काम करती हैं, अथक मेहनत करती हैं।

हाँ, आने वाले खतरे का आभास होने पर भी बहुत सारी आत्माएँ सूक्ष्म शरीर का निर्माण नहीं कर पाई। इसके भी कई कारण हैं- उन्हें ज़्यादा समय नहीं मिला, एक मिनट भी नहीं, वे मानसिक और आत्मिक तौर पर इतनी शक्तिशाली नहीं थीं कि वे सहायकारी शक्तियों के द्वारा दी गई मदद का लाभ उठा पातीं या फिर सहायकारी शक्तियों ने उन्हें इसके लायक नहीं समझा होगा, आदि। पर ख़ुशी की बात यह है कि उनमें से काफ़ी आत्माएँ सही समय पर निकल पाईं और सूक्ष्म शरीर का निर्माण करके परलोक में आईं। यह कोई पहली बार नहीं है कि ऐसा हादसा धरती पर हुआ हो। सदियों से ऐसा ही चलता आ रहा है। ऐसे वक़्त परलोक के लिए बहुत व्यस्तता के होते हैं, पर हम उसे साधारण तौर पर ही लेते हैं।

तो, आत्मा की जिज्ञासा सही है, मगर अहम बात यह है कि जो ज्ञान तुम्हें मिल रहा है, उसको इस्तेमाल करो। सिर्फ़, 'अरे वाह! मुझे तो आत्मा की बारीकियाँ (intricacies) मालूम पड़ रही हैं', से काम नहीं चलेगा। तुम्हें उस ज्ञान का इस्तेमाल करना पड़ेगा। तुम्हें निःस्वार्थ सेवा, दान-पुण्य, सभी के लिये न्यायदृष्टि को बनाए रखना, सबके साथ उचित व्यवहार, आदि करना पड़ेगा। यह तुम्हारी आत्मा की भलाई और तरक़्क़ी के लिए बहुत ज़रूरी है। नेचर के नियमों के बारे में फ़िक्र मत करो। नेचर अपने वायदों को पूरा करती है। नेचर में ऐसा बहुत कुछ है, जो इन्सानी आँख से छुपा हुआ है। भला करो, भला सोचो, तब ही आत्मा का भला होगा।

- परलोक सन्देश

यदि तुम कोई बात जानकर या सीखकर लाभ उठाना चाहते हो,
तो छिपे रहने का प्रयास करो और लोगों से आदर पाने
की कोशिश कभी न करो।

भाव प्रकाश (महाशिविर 2017)

क्या लाभ हुआ? यह बता पाना बयान से परे है, कोई शब्द ही नहीं हैं मेरे पास, जो पूरी तरह से बता पायें। बस यही प्रार्थना है कि भगवन् से जब तक इस लोक में हूँ इस महाशिविर में हमेशा आ पाऊँ और परलोक में जाने के बाद भी। मेरी योग्यतानुसार भगवन् जिस कार्य में लगाना चाहें, मैं सहर्ष तैयार हूँ। इन्तज़ार है उस पल का, जब भगवन् मुझ पर कृपा करेंगे और मेरा हाथ पकड़ लेंगे।

– ममता सक्सेना (चण्डीगढ़)

यही प्रार्थना है कि श्री देवगुरु भगवन् की अपने परिवार सत्य धर्म बोध मिशन पर कृपादृष्टि सदा बनी रहे और अपने देवप्रभावों की वर्षा सदा इस परिवार पर करते रहें। भगवन् आपका शुभ हो! भगवन् आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!

– अनिल अग्रवाल (अम्बाला शहर)

अच्छा प्लेटफॉर्म है और अच्छी विचारधारा है।

– देवी दयाल अग्रवाल (पानीपत)

उत्कृष्ट भाव हैं तथा उत्कृष्ट प्रयास भी।

– अरुण गुबरेले (भोपाल)

भगवन् के श्रीचरणों में नतमस्तक हूँ। भगवन् आप धन्य हैं। आपकी कृपा से अपने भीतर झाँकने की हिम्मत मिलती है। आपकी रोशनी में अपनी कमजोरियाँ स्पष्ट नज़र आती हैं। भगवन् को बारम्बार धन्यवाद देती हूँ जो मुझमें अच्छे भावों को जगाते हैं।

– बबीता गुप्ता (लुधियाना)

यहाँ आकर मुझे जो देव प्रभाव मिले हैं, उसका कुछ ब्यान नहीं हो सकता। बहुत अच्छा वातावरण रहा। बहुत बल मिला है। बल भी ऐसा कि भविष्य में मैं हानिरहित जीवन और सेवाकारी जीवन बिता सकूँ। इन दिनों माँ-बाप की बहुत याद आती रही, उनके होते हुए मैं सब बुराई करता था। जुआ शराब आदि ही मेरा जीवन था और मैं बर्बाद हो रहा था। आज सब बुराइयाँ छूट गई हैं, तो माँ बाप नहीं हैं। बहुत रोता हूँ और उनके लिए शुभकामना करता रहता हूँ। भगवन् से जुड़ने से पहले मेरे मरने के लिए कामना की जाती थी, अब मेरी लम्बी आयु के लिए। भगवन् से श्रद्धा, कृतज्ञता, विश्वास और आकर्षण के भावों के साथ जुड़ा रह सकूँ। हृदय के बहुत गहरे भावों से यह प्रार्थना करता रहता हूँ। सबका शुभ हो!

– अशोक खुराना (लुधियाना)

कोई भी काम कर्म के बिना सफल नहीं होता। ज्ञान, कर्म और धैर्य, ये तीन बातें किसी में हों, तो समझो तरक्की सामने खड़ी है।

इन दिनों अधिक से अधिक सेवाकारी बनने की प्रेरणाएं मिलती रही। मेरा पूरा जीवन भगवान् के मिशन में काम आ जाये, यह मेरी हार्दिक इच्छा है।

– आर.एस. सिंघल (ग़ाज़ियाबाद)

यहाँ आकर परिवार व समाज के हित में कार्य अधिक करने हेतु नवीन सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि हुई है। स्वयं के शारीरिक, मानसिक व आत्मिक विकास के प्रति अधिक ज़िम्मेदार बनने की योग्यता में आयाम हासिल हुआ है।

– डॉ. साकेत गर्ग बेहट (सहारनपुर)

पहले मैं भौतिकवादी जीवन जीना पसन्द करती थी और अहं भाव में थी। जबसे भगवन् से जुड़ी हूँ मेरा जीवन सादगी की ओर बढ़ने लगा है। आर्थिक व भौतिक जगत् में रुचि घटी है तथा दूसरों के दुःख व कष्ट मुझे अपने लगते हैं। मन करता है कि मेरा अस्तित्व दूसरों के काम आए। मैं अपने व्यवसाय से दूसरों की ज़्यादा से ज़्यादा मदद कर सकूँ। मेरे सम्बन्धों में काफ़ी सुधार आया है। माता-पिता तुल्य सास ससुर व धर्मपति को धन्यवाद देती हूँ जिनकी वजह से मैं सत्यधर्म बोध मिशन जैसी अद्वितीय संस्था से जुड़ी व भगवान देवात्मा की अनमोल शिक्षाओं को पढ़ने व सुनने तथा स्वयं के जीवन को अर्थपूर्ण ढंग से जीने का अवसर प्राप्त हुआ है।

– डॉ. नीता गर्ग (बेहट, सहारनपुर)

पहली बार आने का मौक़ा मिला मुझे यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा। हम तो अभी तक अन्धेरे में ही जी रहे थे। कुछ भी ज्ञान न था। भगवान् देवात्मा से निकटता बढ़ी है। उनसे यही प्रार्थना है कि अपनी कृपा मुझ पर बनाए रखें, ताकि मैं यहाँ हमेशा आती रहूँ।

– रमनदीप कौर (घलकलां, मोगा)

यहाँ आकर बहुत लाभ मिला। अच्छे या बुरे का अन्तर समझ में आया। ज़िन्दगी जीने का सही ढंग समझ में आया। जो कुछ पाया है, उसका बयान सम्भव नहीं है।

– परमजीत कौर (अमृतसर)

महाशिविर का वातावरण शान्त व सकारात्मकता से भरपूर था। अपनी आत्मा की स्वच्छता हेतु प्रत्येक को इस अवसर से लाभ उठाना चाहिए। सभी से बहुत प्रेम पाया, दोबारा आना चाहूँगी।

– शीनू खुराना, नोटहिंगम, इग्लैंड

चरित्र की शक्ति मनुष्य को विश्वास के योग्य एवं ठोस जीवन प्रदान करती है।

मिशन से जुड़ना मेरे लिए कितना हितकर हुआ, लिखना कठिन है। इसी मिशन से जुड़कर ही सभी के लिए शुभकामना करने के योग्य हुई हूँ। मेरा शारीरिक, सामाजिक व आत्मिक हर पक्ष में भला हुआ है। मैं भगवन् से बल माँगती हूँ कि मैं इस मिशन के लिए सेवाकारी ज़्यादा से ज़्यादा हो सकूँ। यह मिशन पूरे संसार में अपनी खुशबू फैलाए, जिससे प्राणी मात्र का भला हो! – सुदेश खुराना (लुधियाना)

मुझे आकर बहुत अच्छा लगा। मैं चाहती हूँ कि मेरा परिवार भी इस सत्संग से जुड़े। भगवन् की हम पर कृपा बनी रहे।

– राखीपाल (तिसंग, मुजफ़्फ़रनगर)

यहाँ आकर बेहद ख़ुशी मिलती है। सबको मिलकर धन्य-धन्य हो जाती हूँ। दूसरों की सेवा का भाव यहाँ आकर मिलता है।

– शिमलावती (भायला, सहारनपुर)

हम सबका शुभ हो! मैं तो यहाँ आकर धन्य-धन्य हो गई हूँ। मानो स्वर्ग में हूँ। शुभकामना का भाव लेकर जा रही हूँ। आशा करती हूँ कि इसे ज़िन्दा रख सकूँ।

– बलविन्द्रजीत कौर (चण्डीगढ़)

यहाँ आने की बहुत तड़प थी। इस वातावरण से लौटने का मन ही नहीं कर रहा। इतना प्यार व सम्मान दुनिया में कहीं नहीं मिलता। संगत के शुभ प्रभावों से मन धन्य-धन्य हो गया। इन प्रभावों को निरन्तर बनाए रखने हेतु निज का साधन प्रतिदिन मनोयोग से करने का संकल्प करता हूँ।

– श्रवण कुमार शर्मा (मेरठ)

मैं नीच सुखों में घिरा था। भगवन् की कृपा से बच गया। मैं बार-बार फिसलने की कमज़ोरी रखता हूँ। मेरे लिए शुभकामना करें। मैं प्रतिज्ञाओं पर पक्का रह सकूँ।

– जीतू चन्दवानी (भोपाल)

महाशिविर में शामिल होना, मेरा महासौभाग्य रहा। महाशिविर में एकत्रित सभी शिविरार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। इस शिविर की सभाओं व भावों ने दिल को छू लिया है। मन में कई प्रकार की हलचलें चलीं। दिल ही दिल में संग्राम चल रहा है। काश, इस संग्राम से जो ज्योति जली है, उसे जलाए रख सकूँ।

– मनीष अरोड़ा, न्यू जर्सी (अमेरिका)

मन और बुद्धि कंट्रोल में हो, तो स्थूल कर्मेन्द्रियाँ भी कंट्रोल में आ जाएंगी।

हे जीवनदाता, बचावन हार भगवन्, आपके महोत्सव में आकर आपका सानिध्य पाना, उसे महसूस कर नमन करना मुझ नाचीज़ का अहोभाग्य है। काश इस अनुभूति को अपने साथ हर क्षण संजोए रख सकूँ। मेरी श्रद्धा की आँख ने मुझे इतने लोगों के प्रति गुणग्राही बनाया है कि जिनको गिन भी नहीं सकती। मैं किसी का नाम न लिखकर अपने भाव लिख रही हूँ।

1. कोई व्यक्ति खुद ही सफ़ाई कर्मचारी बन जाए, ख़ुद ही बिस्तर ढोता रहे, फिर सब काम करे भी हँसी ख़ुशी, चाहे कोई देखे न देखे।

2. कोई व्यक्ति सुबह से रात तक रसोई घर में तरह-तरह के पकवान बनवाता रहे, सभी की सेहत का ध्यान भी रखे। सब काम हँसते-मुस्कुराते।

3. कोई व्यक्ति अपनी दुकान भी देखे, सभा भी सुने, बाज़ार के काम भी भागदौड़ कर करता रहे।

4. किसी व्यक्ति का सारा परिवार खड़ी टाँग पर खड़ा हो। जो काम कह दिया, हो गया पूरा।

5. कोई व्यक्ति खुद ही हीलर, खुद मज़दूर, खुद ही सभाकर्ता, सब की सहायता व सेवा, खाने-पीने, आराम की परवाह नहीं।

6. कोई स्त्री पुरुषों के बराबर सभा भी करवाए, ऑफिस के काम, सजावट के काम, भजनों की व्यवस्था के साथ-साथ भगवन् के ओरा में रहे, दूसरों को भी जोड़े।

7. कोई व्यक्ति सैंकड़ों मील से सफ़र करके, अपनी थकान भूलकर अधिकतर समय लोगों की पीड़ा सुने, ढाढस दे, हीलिंग करे, कौंसलिंग करे, जिनके आने की लोगों को इन्तज़ार रहे, आने पर ख़ुशी मिले, राहत मिले। हर वक़्त उच्च तरंगें जिनके पास से निकलें।

ऐसे अनोखे व्यक्तियों की अन्तहीन सूची, इतना बड़ा परिवार, क्यूँ न बनूँ मैं भी ऐसे परिवार का हिस्सा। जहाँ मेरे गुरु हर क्षण विराजमान हैं, मेरे जैसे निकम्मों को भी मिलते हैं। उच्च भावों से सराबोर जनों को तो और भी प्यार से मिलते होंगे।

हे देव, मुझे भी ऐसा बल दो, मैं अगली बार अपने निम्नभावों को जीतकर आऊँ, आपके उच्च ओरे को और अधिक महसूस कर पाऊँ। शुभ हो!

– अशोक कुमारी सिंघल (अम्बाला शहर)

उच्च विचार और सद्‌विचार वाला ही इस जग में महान् है।

इस महाशिविर पर अपनी बिना वजह गुस्सा करने की आदत से निजात लेने का संकल्प लेता हूँ। काश, मैं इस पर दृढ़ व कायम रह सकूँ। महाशिविर पर धर्म सम्बन्धियों से मिलकर बेहद प्रसन्नता हुई है। सभी से बेहद प्रेम पाया है। सभी का धन्यवाद।

–जे.पी. गोयल (रुड़की)

महाशिविर सारा प्रबन्ध, व्यवस्थाओं का वितरण देखने लायक रहा, सभी सेवाकारियों को साधुवाद। 'मस्ती की पाठशाला' द्वारा बच्चों के चरित्र निर्माण का प्रयास प्रशंसनीय है। मेरी आत्मा को यहाँ आकर चार्ज होने का अवसर मिला है। देवाश्रम में आधुनिक सभी सुख सुविधाओं की उपलब्धता सराहनीय है।

– मदन लाल घई (राजपुरा, पंजाब)

भगवान् देवात्मा की शिक्षाओं में पलने का सौभाग्य मिला। महाशिविर में बैठकर अपनी कमियों की ओर ध्यान जाता रहा। भगवन् से बल पाकर उन्हें दूर कर सकूँ। अपनी सन्तान को भगवन् से जोड़ पाऊँ। वो दिन मेरे जीवन में सबसे बड़ी ख़ुशी का दिन होगा, जब मेरे बच्चे भगवन् के दर से जुड़ेंगे।

– सरोज गुप्ता (पंचकूला)

भगवन् से बस यही प्रार्थना है कि जिस प्रकार अब तक आपका मेरे सिर पर हाथ बना रहा, उसी प्रकार भविष्य में भी आपके आशीर्वाद का पात्र बना रह सकूँ। आपकी मेहरबानियों को शब्दों में लिखा नहीं जा सकता, उन सबके लिए हृदयगत भाव से धन्यवाद। शुभ हो!

– अनिल गुप्ता (सहारनपुर)

समय मूल्यवान अवश्य है, किन्तु सत्य समय से भी अधिक मूल्यवान है। झूठा आदमी बात -बात पर यह कहता है कि मैं सच कहता हूँ पर सच्चे आदमी अपनी सच्चाई के विषय में कभी मुँह नहीं खोलते।

जहाँ चिन्ता है, वहाँ चैन नहीं हो सकता।

शुभ संग्राम

श्रीमान् जवाहर लाल जी श्री सुशील जी के साथ 04 से 07 फरवरी तक अम्बाला शहर, लुधियाना और बंगा प्रचार सेवा हेतु गए।

अम्बाला शहर: श्री धर्मपाल मित्तल जी के घर पर 04 फरवरी की शाम को 04 बजे सभा की गई। श्री चन्द्रगुप्त जी और सुशील जी ने भजन गाए। सभा में बताया गया हम अपनी बारी में चारों जगतों की सेवा करें, ईमानदार, कृतज्ञ बनें, भगवान् के सच्चे सेवक बने। श्रीमती कृष्णा जी ने ` 500, श्री भारत भूषण अग्रवाल जी की बेटी ने ` 1000 गऊशाला और ` 3000 गरीब बच्चों की पढ़ाई के निमित्त दिया, श्री महेश सेठी जी की दुकान पर रखे गऊशाला दानपात्र से ` 1710 दान मिला।

लुधियाना: श्री अशोक खुराना जी के बड़े बेटे की 05 फरवरी की सगाई के शुभ अवसर पर आए उनके रिश्तेदारों को लेकर श्रीमान् जवाहर लाल जी ने सभा कराई। बताया गया कि परस्पर सम्बन्धों को कैसे हितकर सुखदायी बनाया जा सकता है। बच्चों ने माता-पिता और बहन भाइयों ने एक दूसरे को फूलों के हार पहनाए। बहुत हितकर वातावरण बना। श्रीमती सुदेश खुराना जी ने सभी से अपील की, जैसे उनका जीवन बदला है, देवात्मा गुरु के साथ जुड़कर वैसे आपका भी बने, आप भी जुड़ें। श्री अशोक जी ने भी बतायया यह सब शुभ परिवर्तन कैसे आया। सब सम्बन्धियों ने खुशी लाभ की। कुछ ने पुस्तकें खरीदी, पत्रिका जारी करवाई। धर्म संगत में आने का वायदा किया। इस शुभ अवसर पर ` 2650 दान मिला। श्री जगजीत सिंह मल्होत्रा की दुकान पर रखे गऊशाला के दान पात्र से ` 507 दान मिला तथा उन्होंने ` 1000 पुस्तकों के लिए दिया।

बंगा: श्री खुशपाल सिंह जी के छोटे भाई श्री अमरजीत सिंह की बेटी की शादी 14 फरवरी को थी। इस सन्दर्भ में उनके निवास पर 06 फरवरी की शाम को 6:30 बजे सभा की गई। 20-25 जन शामिल हुए। ` 500 दान मिला उसी दिन श्री खुशपाल सिंह जी की माताजी की पुण्य तिथि भी थी उनकी माताजी के फोटो पर सभी ने फूल अर्पण किए। माता-पिता को बच्चों ने हार पहनाए। भाई बहनों ने भी एक दूसरे को हार पहनाए। सभी ने पहली दफा यह साधन किया। सबने खुशी मनाई। ` 3000 खुशपाल सिंह जी ने लंगर के लिए दान दिया। ` 720 गऊशाला के दान पात्र से मिले।

यह सारा संग्राम काफ़ी हितकर रहा।

बुराई की रीस छोड़ अच्छाई की रेस करो।

प्रेरणास्पद उद्‌बोधन सेवा

हरिद्वारः 22 जनवरी, 2018 की सायं 6 बजे स्थानीय निरंजनी अखाड़ा में श्री योगेन्द्र जी बद्धवार के निवास पर मात-पिता सन्तान यज्ञ का साधन रखा गया। डॉ. नवनीत जी ने उद्‌बोधन दिया। श्री योगेन्द्र जी, श्री धर्मपाल जी त्यागी, श्री संजय त्यागी एवं श्रीमती शुचि जी आहूजा ने अपने-अपने माता-पिता व सन्तान से पाई सेवाओं के सम्बन्ध में हृदयस्पर्शी भाव प्रकाश किए। श्री हरेन्द्र मलिक, डी.एस.पी. भी इस सभा में शामिल हुए। सभा के अन्त में उपस्थित जनों ने माता-पिता का फूलों के हारों से अर्चन किया एवं उनका आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर ` 780 दान व पुस्तकें हेतु प्राप्त हुए।

रुड़कीः 26 जनवरी, 2018 को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर स्थानीय सेंट जोसेफ जूनियर हाईस्कूल में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. नवनीत अरोड़ा जी को आमन्त्रित किया गया। ध्वजारोहण के उपरान्त आपने बच्चों को सकारात्मक सोच, संकल्प, अनुशासन व समर्पण के साथ जीवन में आगे बढ़ने हेतु प्रेरणा दी। अच्छा वातावरण बना।

31 जनवरी, 2018 को स्थानीय समाजसेवी संस्था 'वाणप्रस्थी जनजागृति अभियान समिति' के स्थापना दिवस के अवसर पर डॉ. नवनीत जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया। श्रीमान् जवाहर लाल जी, श्री ईश्वर दत्त जी शर्मा भी उनके साथ में तशरीफ़ ले गए। श्री शिवम कुमार ने मिशन की ओर से पुस्तकों का स्टॉल संभाला। इस समारोह में श्री अशोक पाण्डेय, नगर आयुक्त, नगर निगम, रुड़की विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम में संस्था के उद्देश्यों व उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया। डॉ. नवनीत जी ने अपने उद्‌बोधन में कृतज्ञता व सेवा भाव की महिमा पर प्रकाश डाला। आपका बयान उच्च भावों से इतना अधिक ओत-प्रोत था कि उपस्थित जनों में से शायद ही कोई ऐसा जन शेष रहा हो, जो अश्रुपात करने पर मज़बूर न हो गया हो। प्रायः 90 प्रबुद्ध जन इससे लाभान्वित हुए। प्रायः ` 2200 की पुस्तकें लोगों ने खरीद कीं। सभी को देवाश्रम में आने एवं 'सम्बन्धों का उत्सव' नामक शिविर से लाभ उठाने हेतु प्रेरित किया गया। सबका शुभ हो!

विघ्नों का काम है आना और आपका काम है विघ्न-विनाशक बनना।

बिना त्याग के भाग्य नहीं बनता, इसलिए त्यागमूर्त बनो।

न्यूजर्सी केन्द्र समाचार

20 दिसम्बर, 2017 को न्यूजर्सी स्थित धर्मसाथियों ने अपने-अपने निवास पर प्रातः जल्दी उठकर निजी रूप से भगवान् देवात्मा का जन्म दिवस मनाया। इस उपलक्ष्य में एक साधन 30 दिसम्बर को रखा गया, जिसमें अनुराग रोचलानी, नवीन देम्बला, मनीष व सुधांशु अरोड़ा सपरिवार तथा पंखुरी अरोड़ा, नवनीत व जौली (दामाद व बेटी अर्चना अरोड़ा), नवनीत जी की माताजी व नवीन जी की माता सम्मिलित हुए। इनके भिन्न सुश्री महक गोनदानी, अनीता वाटवाणी भी बाहर से आकर लाभान्वित हुए। अनुराग जी के निवास पर साधन रखा गया व उन्हीं के माध्यम से सम्पन्न हुआ। आपने भगवान् देवात्मा के देवजीवन की गाथा एवं उससे हम क्या सीख सकते हैं, के विषय में सारगर्भित उद्बोधन दिया। श्री मनीष अरोड़ा ने रुड़की महाशिविर (18-21 दिसम्बर) में अपनी माताजी के साथ लाभ उठाया, उसी के बारे में अपने अनुभव सांझा किये तथा संक्षिप्त विवरण दिया। आपने वहाँ जो देवप्रभावों का वातावरण देखा, उसका सारगर्भित, परन्तु हृदयस्पर्शी बयान किया। तत्पश्चात्, सभी ने भगवान् से पाए लाभों के सन्दर्भ में भाव प्रकाश किया। सभी ने सामूहिक भोज का आनन्द लिया। अन्त में **Better Living Through Giving** की मीटिंग सम्पन्न हुई, जिसमें समाज से पाए सेवा को अपनी बारी में कैसे लौटाया जाए, के विषय में योजना तैयार की गई।

27 जनवरी, 2018 को श्री मनीष अरोड़ा (न्यूजर्सी) के निवास पर मात-पिता-सन्तान दिवस मनाया गया। श्रीमती शिल्पा रोचलानी देम्बला ने साधन करवाया। सभी छोटे-छोटे बच्चों ने भी अपने-अपने भाव प्रकाश लिखकर दिये। मात-पिता की सेवाओं को उनके मुख से सुनना बहुत प्यारा लग रहा था। अपने-अपने भावप्रकाश के उपरान्त बच्चों ने मात-पिता को फूलों के गुलदस्ते भेंट किये। परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के सूक्ष्म संरक्षण में बड़ा अच्छा वातावरण बना। प्रायः 32 जन इस साधन से लाभान्वित हुए तथा जलपान से साधन सम्पन्न हुआ। सबका शुभ हो!

ज़माना बदल रहा है

पुराने ज़माने में जब कोई अकेला बैठकर हँसता था, तो लोग कहते थे कि इस पर कोई भूत-प्रेत का साया है। किन्तु आज कोई अकेले में बैठकर हँसता है, तो कहते हैं मुझे भी फारवर्ड कर दे।

शुभ एवं श्रेष्ठ विचारों वाला ही पूरी तरह स्वस्थ है।

भोपाल केन्द्र समाचार

भोपाल से श्रीमान् अशोक रोचलानी जी लिखते हैं:

रुड़की महाशिविर से भोपाल वापसी पर हम लोग दिल्ली में दो दिन रुके। मनोहर जी के निवास पर हीलिंग का विशेष सत्र तनवी जी ने रखवाया। पूरा दिन उस सेवा में व्यस्त रहे। सभी से हितकर बातचीत भी चलती रही। भोपाल से इस बार महाशिविर पर एक नए जन श्री अरुण गुबरेले भी पहुँचे। वह रुड़की से बहुत प्रभाव पाकर आए हैं और अपने परिवार को जोड़ने के लिए बहुत प्रयासशील हैं। 07 जनवरी 2018 को स्थानीय सहारा ऐस्टेट में अपने निवास पर सत्संग साधन रखवाया। श्रीमान् अशोक जी ने 'मानवीय सम्बन्धों में मिठास की ज़रूरत' विषय पर साधन करवाया। बहुत अच्छा वातावरण बना। प्रायः 35 जन लाभान्वित हुए।

इससे पूर्व पहले की भाँति टहलरामानी परिवार में दो साधन हुए। पूरे परिवार ने लाभ उठाया। भोपाल में दूरियाँ ज़्यादा होने के कारण हर बार एक जगह सभी का एकत्र हो पाना सहज नहीं है। अलग-अलग परिवार सुविधानुसार आकर मिलते रहते हैं तथा ख़ूब हितकर चर्चा चलती है। एक सभा जैसा वातावरण पैदा होता है और दिल ख़ुशी से भरा रहता है। हीलिंग की सेवा तो लगातार चलती रहती है और परलोकवासियों से बात करने के लिए भी कई जन आते रहते हैं। भगवन् की अत्यन्त मेहरबानी व सहायकारी शक्तियों की मदद स्पष्ट रूप से अनुभव होती है, जिससे दिल उनके श्री चरणों में नतमस्तक रहता है। शुभ हो!

नई पुस्तक

हर्ष का विषय है कि 'कृतज्ञता-एक क़दम उच्च जीवन की ओर' (**Gratitude-A step towards higher life**) नामक पुस्तिका छपकर तैयार हो चुकी है। सहयोग राशि मात्र ` 10 रखी गई है। पाठकों से निवदेन है कि इसकी प्रतियाँ देवाश्रम रुड़की से मंगवाकर स्वयं पढ़ें व दूसरों को पढ़वायें। सबका शुभ हो!

EGO

Ego is like dust in the eyes. Without clearing the dust, we cannot see anything clearly. So clear the ego and see the world.

हमारा प्रयत्न अपने को जीतना और प्रतिदिन शक्तिमान होते जाना तथा पवित्रता में उत्तरोत्तर उन्नति करते जाना होना चाहिए।

शोक समाचार

❖ शोक का विषय है कि श्रीमती रजनी कंसल जी, धर्मपत्नी श्री राजेश कुमार जी कंसल का रुड़की में दिनांक 17 जनवरी, 2018 को प्रायः 68 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप मृदुभाषी, शान्त, हँसमुख व एक दानी महिला थीं। 24 जनवरी, 2018 को आर्य उपवन, रुड़की में उनके सम्बन्ध में श्रद्धाजंलि सभा का आयोजन हुआ, जिसमें मिशन की ओर से प्रो. नवनीत जी अरोड़ा ने उनके लिए सामूहिक मंगलकामना करवाई एवं संक्षिप्त उद्‌बोधन दिया। परिवार की ओर से 'अटल सत्य' नामक पुस्तक की दो सौ प्रतियाँ वितरित की गईं। माननीया श्रीमती जी का परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! सम्पर्क सूत्रः राजेश कंसल 96341-87007

❖ शोक का विषय है कि श्री सत्प्रकाश जी भण्डारी, पटियाला का पिछले वर्ष 1 फरवरी, 2017 को प्रायः 86 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप निहायत नेक, विनम्र, श्रद्धावान् व दानी आत्मा थे। आप श्री रामकरण दास जी भण्डारी के सुपुत्र थे, जिनमें परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की शिक्षाओं से बड़ा सुन्दर परिवर्तन आया था। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

सम्पर्क सूत्रः श्रीमती भण्डारी 94170-22879

❖ शोक का विषय है कि हमारी साथी सेविका श्रीमती मनीषा सिंघल जी की माननीया माता श्रीमती उर्मिला देवी जी का प्रायः 75 वर्ष की आयु में 03 फरवरी, 2018 को मंगलौर (जिला-हरिद्वार) में देहान्त हो गया। परलोक में उनका हर प्रकार से शुभ हो! सम्पर्क सूत्रः श्रीमती मनीषा 99972-45679

❖ शोक का विषय है कि हमारी पुरानी वयोवृद्धा साथी सेविका श्रीमती कृष्णा कुमारी जी (धर्मपत्नी श्री प्रेमचन्द जी गुप्ता, कालका) का 91 वर्ष की आयु में 03 नवम्बर, 2017 को पंचकूला में देहान्त हो गया। इनके निमित्त रखी गई श्रद्धाजंलि सभा में श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी ने हृदयस्पर्शी भजनों का गान किया। आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

साधक का व्यवहार उसका आचरण, स्वभाव, आन्तरिक, बाहरी पवित्रता इतनी ऊँची होनी चाहिए कि जिसे देखकर मिसाल कायम हो सके।

परिस्थितियों के अनुसार ही जीव अपने जीवन में आवश्यक परिवर्तन करता है।

अखबारों के रजिस्ट्रेशन एक्ट के नियम 8 के अनुसार 'सत्य देव संवाद' के विषय में आवश्यक ब्यौरा

1. स्थान जहाँ से अखबार प्रकाशित होता है - रुड़की (उत्तराखण्ड)
2. प्रकाशन की अवधि - मासिक
3. प्रिंटर का नाम - ब्रिजेश गुप्ता
   राष्ट्रीयता - भारतीय
   पता - 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की
4. पब्लिशर का नाम - ब्रिजेश गुप्ता
   राष्ट्रीयता - भारतीय
   पता - 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की
5. सम्पादक का नाम - डॉ0 नवनीत अरोड़ा
   राष्ट्रीयता - भारतीय
   पता डी-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई. आई. टी., परिसर, रुड़की
6. अख़बार के मालिक का नाम और पता - डॉ0 नवनीत अरोड़ा
   डी-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई. आई. टी., परिसर, रुड़की

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र :

सत्य धर्म बोध मिशन

रुड़की (99271-46962), दिल्ली (98992-15080), भोपाल (97700-12311), सहारनपुर (98976-22120), गुवाहटी (94351-06136), ग़ाज़ियाबाद (93138-08722), कपूरथला (98145-02583), चण्डीगढ़ (0172-2646464), पद्मपुर (09309-303537), अम्बाला (94679-48965), मुम्बई (9870705771), पानीपत (94162-22258), लुधियाना (70094-36618)

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफसैट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया
सम्पादक - डॉ0 नवनीत अरोड़ा, D-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की
ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242